भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के के. स. के कामरेड राव , डांगे, घोष और पुन्नायिया के साथ स्तालिन की चर्चा का रिकॉर्ड

९ फेब्रुअरी १९५१

परिचय

इस साक्षत्कार में भाकपा नेतृत्व द्वारा उठाये गए प्रश्नों पर अपने विचार **स्तालिन** ने व्यक्त किये. चीन और भारत के बीच अर्थव्यवस्था के विकास और रेलवे नेटवर्क के सन्दर्भ में महत्वपूर्ण अन्तरो पर सोवियत नेता ने जोर दिया जो इन देशों में रणनीतिक लाइनो की भिन्नता की आवश्यकता को प्रभावित करता था. भारतीय कम्युनिस्टों को स्तालिन द्वारा दिए गए सुझावों में उन्होंने रूसी और चीनी क्रांति के अनुभवों की तरफ बड़े पैमाने पर ध्यान आकर्षित किया. बाद की टिप्पणियां विशेष महत्त्व की हैं क्योकि वे अपनी शानदार जीत के तुरंत बाद महान चीनी क्रांति के बारे में उनका मूल्यांकन पेश करती है.[1] चीनी क्रांति का रास्ता, चीनी पथ की बारीकियों के बारे में स्तालिन के मूल्यांकन, जिसे उन्होंने एक मिसाल के रूप में भाकपा नेताओं के सामने रखा, उस पथ पर उनलोगो की व्याख्याओं से काफी अलग है जो लोग समकालीन भारत में श्रमिक वर्ग और किसानों की भूमिका के संबंध में उस मार्ग पर चलना चाहते थे. भारतीय क्रांति में और विशेष रूप से सशस्त्र क्रांति में इन दोनों वर्गों की भूमिका की आवश्यकता पर स्तालिन ने जोर दिया. भारतीय कम्युनिस्ट आन्दोलन में व्यक्तिगत आतंकवाद के प्रति झुकाव को उन्होंने चिन्हित किया. तेलंगाना आन्दोलन के बारे में स्तालिन ने कहा कि गृह युद्ध के प्रथम अंकुरण होने के चलते इसका समर्थन करना जरुरी था.

भाकपा के समक्ष विद्धमान समस्याओं की स्तालिन की समझ ने पार्टी के इतिहास पर गहरा असर डाला क्योकि इसने भारतीय राज्य की समझ, क्रांति की अवस्था, क्रांति का पथ, और सशस्त्र क्रांति और सशस्त्र संघर्ष, क्रांतिकारी प्रक्रिया में मजदूर वर्ग और किसानो की भूमिका की समझ के बारे में पार्टी दृष्टिकोण के पुनर्निर्माण करने की ओर ले गया. इसकी अभिव्यक्ति नयी पार्टी दस्तावेजों के निर्माण में

मिली जो १९५१ के मास्को में भाकपा और सीपीएसयू (बी) के प्रतिनिधियों के बीच मास्को बैठकों के तुरंत बाद तैयार किये गए थे.[2]

हालाकि १९५१ में भारतीय क्रांति के सवालों पर लिए गए निर्णय अल्पकालिक साबित हुई. सोवियत संघ में १९५३ के बाद परिवर्तन और सीपीएसयू की 20 वीं कांग्रेस के साथ तीन साल बाद सीपीआई के कार्यक्रम और रणनीतिक दृष्टिकोण में बदलाव आया: लोगों की लोकतांत्रिक क्रांति के चरण को राष्ट्रीय जनतांत्रिक क्रांति के पक्ष में हटा दिया गया था जिसमे राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के लिए एक बढ़ी हुई भूमिका होती है, और क्रांतिकारी रणनीतियों को शांतिपूर्ण और संसदीय रास्ते द्वारा बदल दिया गया था.[3] भाकपा आधी सदी से सीपीएसयू की २०वीं कांग्रेस के थीसिस की सीमा के भीतर रही है. सीपीआई (एम), भाकपा के विरोध में, लोगों की लोकतांत्रिक क्रांति के अपने समर्थन पर जोर दिया और १९५१ के क्रांतिकारी अवस्थितियो का बचाव किया. इसने कम से कम जाहिरा तौर पर, अपने से बायीं, अर्थात् भाकपा (माले) के टकराव में, १९५१ की अवस्थितियो का बचाव जारी रखा जिन्होंने भी लोगों की लोकतांत्रिक क्रांति को सही ठहराया, लेकिन जरूरी नहीं कि वे भारतीय क्रांति के पथ के संबंध में १९५१ में स्तालिन द्वारा पेश किये गए अवस्थितियो के समर्थन में थे.

लेकिन सीपीआई (एम) के स्थापना के एक दशक के भीतर ही इसके महासचिव को यह स्पष्ट हो गया कि पार्टी ने १९५१ के दृष्टिकोण को पीछे छोड़ दिया है. उन्होंने साफ़-साफ़ कहा कि सीपीआई (एम्) एक क्रन्तिकारी पार्टी की दृष्टि से सभी मामलो पर खड़ी नहीं उतर रही है: 'आने वाले एक लम्बे काल के लिए हमारे व्यवहार गहरी जड़ें जमाये संसदीय, विधि-सम्मत भ्रम पर और पार्टी और आंदोलन के शांतिपूर्ण विकास की संभावनाओं पर आधारित है.'

पार्टी की लाइन का प्रतिनिधित्व करने वाली १९५१ के सामरिक लाइन के किसानों के पक्षपातपूर्ण युद्ध के साथ मजदूरों के बगावत के संयोजन की आवश्यकता के, भूमिगत कारखाने और कार्यशाला समितियों के साथ एक शक्तिशाली मजदूर वर्ग

के आंदोलन को स्थापित करने की आवश्यकता के परित्याग का उल्लेख पी. सुन्दरयैया ने किया.

पार्टी द्वारा १९५१ के वक्तव्य नीति से पीछे हटने को उन्होंने इस प्रकार रेखांकित किया है:

'...हम सभी सहमत हैं कि हमारे रास्ते वास्तव में रूस या चीन का नहीं है, बल्कि मजदूर वर्ग के किसान गठबंधन के आधार पर, यदि संभव हो तो एक साथ किसान सशस्त्र विद्रोहों और आम हड़ताल और औद्योगिक और प्रशासनिक केंद्रों में सशस्त्र विद्रोह को समाहित किये हुए, हमारा स्वतंत्र पथ होगा. हमारी क्रांति सफल बनाने के लिए, अखिल भारतीय स्तर पर इन दो मुख्य बलों के संयोजन की आवश्यकता अनिवार्य हो जाती है. ***लेकिन अखिल भारतीय जन कार्यों की योजना बनाने के लिए अखिल भारतीय स्तर पर मजदूर वर्ग और किसान आंदोलनों में काम करने के लिए तैयारी के नाम पर इससे हम अनजाने में फिसलते जा रहे है जो हमारी पार्टी की वर्तमान संगठनात्मक कमजोरी, और सामान्य लोकतांत्रिक आंदोलनों की कमजोरी के चलते, हमें पार्टी के अन्य बुनियादी कार्यों की उपेक्षा करते हुए कमो-बेश गतिविधि के संवैधानिक और संसदीय रूपों की ओर ले जाता है.***(जोर मूल में)

पार्टी के नेतृत्व करने की विषम स्थिति को समझते हुए जो उनके शब्दों में 'संशोधनवादी आदतों' से घिरी हुई थी, 1975 में आपातकाल के दौरान महासचिव और सीपीआई (एम) के पोलितबुएरो से इस्तीफा देने का एक मात्र बचा सम्मानीय रास्ता पी सुंदरय्या ने अपनाया.[4]

क्रन्तिकारी ताकते जो १९६० के अंत में सीपीआई (एम्) से अलग हुई, काफी हद तक १९५१ के कार्यक्रम और क्रांति के पथ की समझ से कतराने का काम किया. भाकपा (माले) में प्रमुख प्रवृत्तियों पीसी जोशी और बी. टी. रणदिवे की लाइनों की आलोचना में, आंध्र पत्र, तेलंगाना आंदोलन और चीनी क्रांति की उनकी समझ पर सीधे आधारित दृष्टिकोण के मूल में निहित है. चीनी पथ अपनाने के नाम पर

नवगठित पार्टी ने ट्रेड यूनियनों से पार्टी के काम की वापसी, संसद के रणनीतिक बहिष्कार, गाँव से शहरों को घेरने, और अपनी सैन्य लाइन के रूप में व्यक्तिगत आतंकवाद की नीति को अपना समर्थन दिया- जिसे चीनी क्रांति के अनुभव के साथ संगत माना जाता था. १९४० के दशक में भाकपा के संबंध में सशस्त्र क्रांति में मजदूर वर्ग को शामिल करने की जरूरत और व्यक्तिगत आतंकवाद पर काबू पाने की जरूरत पर स्टालिन की टिप्पणियां नई परिस्थितियों में अपनी वैधता को बरकरार रखा. प्रारंभिक पार्टी लाइन के संकीर्ण गुटीय सीमाओं को पार करने के प्रयासों को कई वर्षों तक जारी रखा गया.

१९५१ में जे वी स्टालिन और भाकपा के प्रतिनिधिमंडल के बीच चर्चा और जो दस्तावेज इसके चलते आये, वे विभिन्न कार्यक्रमों और सामरिक लाइनों को समझने में एक संदर्भ बिंदु की भूमिका अदा करते है जो भारतीय कम्युनिस्ट आंदोलन में व्याप्त है. [5]

विजय सिंह

नोट्स

1. सोवियत और चीनी कम्युनिस्ट नेताओं के बीच संबंधों के ऊपर आधारित हालही में जारी किये दस्तावेजों में हम इसे कहीं नहीं पाते. उदाहरण के लिए देखे, ए एम् लेदोव्स्की, ‘SSSR i Stalin v cyd”bakh Kitaia. Dokumenty i cvidetel”stva uchastnika sobytii: 1937-1952’, Moscow, 1999 और शीत युद्ध के इतिहास परियोजना द्वारा सोवियत-चीनी संबंधों के बारे में दस्तावेजों के किये गए अनुवाद.

2. प्रमुख रूप से भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का कार्यक्रम, रणनीतिक लाइन, भारत की कम्युनिस्ट पार्टी की नीति का विवरण. देखें, मोहित सेन, द्वारा संपादित, 'भारत की कम्युनिस्ट पार्टी के इतिहास के दस्तावेज' खंड आठवीं १९५१-१९५६ पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, १९७७. इन घटनाओं के समांतर सोवियत संघ के एकेडमी ऑफ साइंसेज के ओरिएंटल अध्ययन संस्थान १९५१ ने मार्च और अप्रैल में

भारत में वर्ग शक्तियों के संबंध पर एक व्यापक चर्चा का आयोजन किया जो सोवियत संघ में समकालीन भारतीय घटनाक्रम के सही-अवसरवादी मूल्यांकन के सुधार की ओर ले गया. देखे "भारत में वर्ग शक्तियों का संतुलन", रेवोलुशनरी डेमोक्रेसी' वॉल्यूम VI, No. 2, सितम्बर २०००.

3. लोगों की लोकतांत्रिक क्रांति से राष्ट्रीय लोकतंत्र की समझ में बदलाव के लिए ए सोबेलोव के निम्नलिखित दस्तावेजों में अन्य बातों के साथ पता लगाया जा सकता है: समाज के राजनीतिक संगठन के रूप में " पीपुल्स डेमोक्रेसी ', कम्युनिस्ट समीक्षा, लंदन, जून १९५१, ३-२१,' पूंजीवाद से समाजवाद में संक्रमण के कुछ रूप, 'कम्युनिस्ट पार्टी प्रकाशन, नई दिल्ली, अक्टूबर १९५६ (समाजवाद के लिए संसदीय रास्ता का यहाँ विवरण है)

4. पी. सुंदरय्या, 'मेरा त्याग पत्र' इंडिया पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्युटरस, न्यू डेल्ही, १९९१, पेज २१-३३. ज्योति बसु, ईएमएस नंबूदिरीपाद, बी. टी. रणदिवे, और पी राममूर्ति के आपातकाल के दौरान हिंदू सांप्रदायिक जनसंघ के साथ सहयोग करने की नीति और व्यवहार में उतारने के वकालत करने से सुन्दररय्या विशेष रूप से निराश थे. (पेज - ४- २०)

5. इस संबंध में यह कहा जा सकता है कि भाकपा की अस्थाई केंद्रीय समिति (माले) ने १९५१ के कार्यक्रम और सामरिक लाइन से बिना कोई विवशता महसूस किये सबक लिया है.

कामरेड स्तालिन: आपके प्रश्न मिले है. मै उनका जबाव दूंगा और तब अपनी समझ प्रस्तुत करूगां.

शायद यह कुछ अजीब लगे कि हम लोग यह चर्चा शाम के वक्त कर रहे है. दिन के वक्त हम व्यस्त रहते है. हम काम कर रहे होते है. हम शाम के ६ बजे काम से मुक्त होते है.

संभवतः ऐसा लगे कि हम चर्चा में बहुत अन्दर तक जा रहे है, लेकिन अफ़सोस, दुसरे तरीके से हम अपने मिशन में कामयाब नहीं हो सकते. हमारी के. स. ने व्यक्तिगत रूप से आपसे मिलने का दायित्व हमे दिया है ताकि आपकी पार्टी को सुझाव दे कर आपकी सहायता किया जा सके. हम आपकी पार्टी और आपके लोगो के बारे में बहुत कम जानते है. हम इस मिशन को बहुत ही गंभीरता से ले रहे है.

जैसे ही हम अपने आपको अपना सुझाव देने के लिए निर्णय करते है, हम अपने आपको आपकी पार्टी के लिए एक नैतिक जिम्मेदारी से बंधा पाते है, हम हल्के ढंग से सोचे हुए सुझाव नहीं दे सकते. हम चाहते है कि हम आपके साथ सामग्री से परिचित हो जाए और तब सुझाव दे.

आपको यह थोडा अटपटा लग सकता है कि हमने आपके समक्ष कुछ सवालों को रखा है और यह एकदम प्रश्नावली जैसा लगता है दस्तावेज़ पूरा चित्र नहीं पेश करते और इस लिए हमें यह ढंग अपनाना पड़ा. काम करने का यह एक बहुत ही बेढंगा तरीका है लेकिन कुछ किया नहीं जा सकता. परिस्थितिया हमें मजबूर करती है. हम मामले के सार की तरफ आये.

आपने पुछा: आने वाले भारतीय क्रांति के बारे में आपकी क्या राय है?

हम रुसी लोग इस क्रांति को मुख्य रूप से कृषि क्रांति के रूप में देखते है. यह सामंती संपत्ति की समाप्ति, किसानो के बीच जमीन के बटवारे और उसके किसानो की व्यक्तिगत सम्पति बनने का प्रतिक है. इसका मतलब किसानों की निजी संपत्ति की अभिपुष्टि के नाम पर सामंती निजी संपत्ति का परिसमापन है. जैसा कि हम देखते है, इनमे से कोई समाजवादी कदम नहीं है. हम नहीं समझते कि भारत समाजवादी क्रान्ति के चरण में है. यह उस चीनी पथ की तरह है जिसकी चर्चा हर जगह की जाती है यानि कि राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग की संपत्ति के किसी भी जब्ती या राष्ट्रीयकरण के बिना, सामंती विरोधी कृषि क्रांति. यह बुर्जुआ लोकतांत्रिक क्रांति या लोगों की लोकतांत्रिक क्रांति का पहला चरण है. लोगों की लोकतांत्रिक क्रांति जो चीन में किया गया था, उसके पहले भी जो यूरोप के पूर्वी

देशों में शुरू हुआ था, के दो चरण होते है. पहला चरण - कृषि क्रांति या कृषि सुधार जो आप कहना चाहे. यूरोप में लोगों के लोकतंत्र के देशों ने युद्ध के बाद पहले ही साल में इस चरण के माध्यम से गुजरा. चीन इस पहले चरण में अब खड़ा है. भारत इस चरण के करीब पहुंच रहा है. लोगों की लोकतांत्रिक क्रांति का दूसरा चरण कृषि क्रांति से गुजरते हुए राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग का सम्पतिहरण क्रांति की विशेषता है. यह पहले से ही समाजवादी क्रांति की शुरुआत है. यूरोप के सभी लोगों के लोकतांत्रिक देशों में प्लांटो, कारखानों, बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया हैं और राज्य को सौंप दिया गया है. चीन इस दूसरे चरण से अभी भी दूर है. भारत में यह चरण अभी तक नही आया है या भारत इस चरण से दूर है.

यहाँ आप क्रांति के विकास की चीनी पथ के विषय में कोमिन्फोर्म के अखबार के संपादकीय की बात कर रहे है. यह संपादकीय रणदिवे के लेखों और भाषणों के लिए एक चुनौती था जिसके अनुसार भारत समाजवादी क्रांति के मंजिल में था. हम रूसी कम्युनिस्ट मानते है कि यह एक बहुत ही खतरनाक थीसिस है और इसके खिलाफ आगे आने और बात करने का फैसला लिया गया कि भारत लोगो की लोकतांत्रिक क्रांति के पहले चरण यानी, चीनी रास्ते पर है. आपके क्रन्तिकारी मोर्चा बनाने के लिए सामंती प्रभुओं के खिलाफ पूरे किसानो और कुलको के विद्रोह के लिए, पूरे किसानो के विद्रोह के लिए ताकि सामंती प्रभु अलग-थलग पड़ जाए, आपके लिए इसका खास महत्व है. राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के साथ अंग्रेजी साम्राज्यवाद के गुट को अलग करने के क्रम में, अंग्रेजी साम्राज्यवाद के खिलाफ राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के सभी प्रगतिशील संस्तर के साथ जनता का विद्रोह आवश्यक है. आप लोगों के बीच यह धारणा व्याप्त है कि सभी साम्राज्यवादियों - अंग्रेजी और अमेरिकियों- सभी को एक ही झटके में निष्कासित किए जाने की जरूरत है. ऐसे मोर्चे का निर्माण करना असंभव है. सभी-राष्टीय मोर्चे की तेज धार को आवश्यक रूप से अंग्रेजी साम्राज्यवाद के खिलाफ निर्देशित होना है. अमेरिकियों सहित अन्य साम्राज्यवादियों को सोचने दे कि आप उनके बारे में चिंतित नहीं हैं. यह इसलिए आवश्यक है क्योकि आपके कार्य आप के खिलाफ सभी

साम्राज्यवादियों को एकजुट नहीं होने देते. और उस के लिए आप उन के बीच कलह भी बोना चाहिए. अब, अमेरिकी साम्राज्यवादी यदि खुद को एक लड़ाई में झोकना चाहे तो भारत के संयुक्त राष्ट्रीय मोर्चा को उनके खिलाफ कार्रवाई में छलांग लगाने की आवश्यकता होगी।

घोष -मुझे स्पष्ट नहीं है कि क्यों केवल ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ जब कि आज पूरी दुनिया अम्रेरिकी साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष में है जो लोकतंत्र विरोधी शिविर का मुखिया माना जाता है?

कामरेड स्तालिन : यह बहुत सरल है; राष्टीय संयुक्त मोर्चा इंग्लैंड के विरुद्ध है, इंग्लैंड से, न कि अम्रीका से राष्टीय आजादी के लिए. भारत को किससे अर्द्ध मुक्त कराया गया था? इंग्लैंड से, और न कि अमेरिका से, भारत अमेरिका के साथ नहीं बल्कि इंग्लैंड के साथ राष्ट्रों के कोन्कोर्ड(समझौता) में है. आपकी सेना में अधिकारी और विशेषज्ञ अमेरिकन नहीं बल्की अंग्रेज है. ये ऐतिहासिक तथ्य हैं और इनसे कुछ और निष्कर्ष निकालना असंभव है. मैं कहना चाहता हूँ कि पार्टी को अपने ऊपर सभी कार्य भार, दुनिया भर में साम्राज्यवाद के साथ संघर्ष का कार्य भार एक साथ नहीं लेना चाहिए. एक कार्यभार, अंग्रेजी साम्राज्यवाद से अपनी मुक्ति का कार्यभार लेना आवश्यक है. यह भारत का राष्टीय कार्यभार है. हमें सामंती वर्गों पर भी विचार करना चाहिए. बेशक, कूलक दुश्मन हैं. लेकिन सामंती प्रभुओं के साथ संघर्ष करने के साथ साथ कुलक के साथ संघर्ष करना मूर्खता होगी. अपने उपर दो भार -कूलक के साथ संघर्ष और सामंतो के साथ संघर्ष- लेना गलत होगा. मोर्चा इस तरह बनाना आवश्यक है कि दुश्मन, न कि आप अलग-थलग पड़े. ऐसा कहना, कम्युनिस्ट पार्टी के संघर्ष को आगे बढाने का एक तरीका है. कोई भी व्यक्ति, अगर वह वुद्धिमान है, अपने ऊपर सभी भारो को नहीं लेना चाहेगा. अपने ऊपर एक भार लेना आवश्यक है- सामंतवाद, और इंग्लॅण्ड के साम्राज्य के अवशेषों का नाश. सामंती प्रभुओं को अलगाव में डालने के लिए, सामंती प्रभुओं का नाश करने के लिए, और अंग्रेजी साम्राज्यवाद को हराने के लिए, कुछ समय के लिए अन्य साम्राज्यवादी शक्तियों के खिलाफ कुछ न करे. अगर

आप इस तरह अपने रास्ते परे चलेगे- यह समस्याओं को हल्का करेगा. अब, यदि अमेरिकन प्रहार करते है, तब उनके खिलाफ संघर्ष करना जरुरी होगा, लेकिन तब लोग जानेगें कि तुम नहीं बल्कि उन्होंने आक्रमण किया था. निश्चित रूप से अमेरिकी और कुलको से हिसाब चुकता करने का समय आयेगा. लेकिन यह बाद में होगा, प्रत्येक की अपनी बारी आएगी.

घोष- अब मुझे स्पष्ट है.

डांगे- क्या अमेरिकी साम्राज्यवादी के खिलाफ चलाये जाने वाले प्रचार और आन्दोलनात्मक कार्य और उनके विरुद्ध संघर्ष में यह बाधा नहीं डाले गा?

कामरेड स्तालिन: बिल्कुल नहीं. वे लोगों के दुश्मन हैं और उनके खिलाफ संघर्ष करना आवश्यक है.

डांगे: मैंने यह सवाल इस लिए रखा ताकि कोई भी इसे अमेरिकी साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष करने के कार्यभार की व्याख्या अवसरवाद के रूप में न करे.

कामरेड स्तालिन : शत्रु को बुद्धिमत्ता पुर्वक अलग थलग किये जाने की जरुरत है. आपलोग क्रान्ति अमेरिकन के खिलाफ नहीं बल्कि अंग्रेजो के खिलाफ कर रहे है. यदि अमेरिकी हस्तक्षेप करते है, तब यह अलग बात होगी.

राव : कुलको के बीच एक छोटा सा हिस्सा है जो सामंती शोषण में सलंग्न है; वे पट्टे पर भूमि देते हैं और वे सूदखोर हैं.

कामरेड स्तालिन : यह महत्वपूर्ण नहीं है. सामंती प्रभुओं के खात्मे के प्रमुख सामान्य कार्य की तुलना में, यह एक विशेष काम है. अपने प्रचार में आपको समृद्ध किसानों के खिलाफ नहीं बल्कि सामंती प्रभुओं के खिलाफ बोलने की जरूरत है. आपको खुद ही कुलको को सामंती प्रभुओ की तरफ नहीं धकेल देना चाहिए. यह जरुरी नहीं है कि सामंती प्रभुओं के लिए एक सहयोगी पैदा किया जाए. कुलको का गाँव में बड़ा प्रभाव होता है, किसान समझते है कि कूलक अपनी योग्यता से

अपना रास्ता बनाते है. यह जरुरी नहीं है कि कुलको को किसानो से विघटित होने की सम्भावना पैदा की जाए. क्या आपके सामंती प्रभु आभिजात्य वर्ग के लोग है?

राव: हाँ.

कामरेड स्तालिन : किसान आभिजात्य वर्ग के लोगो को पसंद नहीं करते. यहाँ यह समझना जरुरी है कि सामंती प्रभुओं को किसानो के बीच से कोइ सहयोगी पाने की साम्भावना न दी जाए.

पुन्नायिया: हमारे बीच राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के सवाल पर भ्रम की स्थिति मौजूद है. राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के तहत ठीक से क्या समझा जा सकता है?

कामरेड स्तालिन : साम्राज्यवाद दूसरे के देश की जब्ती की राजनीति है. क्या आपके राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग वास्तव में अन्य देशों पर कब्जा करने के बारे में सोच रहा है? इसी दौरान भारत ब्रिटिश साम्राज्यवाद के कब्जे में है. राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग-मध्यम, बड़े आपके राष्ट्रीय शोषक हैं. यह कहना आवश्यक है कि आप उनके बने रहने के खिलाफ नहीं, बल्कि विदेशी शत्रु के खिलाफ, अंग्रेजी साम्राज्यवाद के खिलाफ है. राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के बीच कई तत्व आपके साथ गठबंधन में खुद को पाते है. शीर्ष राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग - यह साम्राज्यवाद के साथ गठबंधन में पहले से ही है, लेकिन यह केवल एक हिस्सा है और इसके अलावा, यह बड़ा नहीं है. भारत की पूर्ण स्वतंत्रता के लिए संघर्ष में आप के समर्थन में मूल रूप से पूंजीपति की दिलचस्पी है. सामंतवाद के समापन में यह रुचि रखता है. पूंजीपति वर्ग को एक बाजार, एक अच्छे बाजार की जरूरत है, यदि किसान जमीन अधिग्रहण करेगें तो एक आंतरिक बाजार होगा, ऐसे लोग होंगे जिनके पास खरीद करने की क्षमता होगी. यह सब प्रेस में स्पष्ट करना आवश्यक है. यह आप के लिए लाभप्रद होगा इससे राष्टीय पूंजीपति वर्ग अंग्रेजो के पक्ष में नहीं जायगें. आपको मामले को इस तरह से रखना है कि अंग्रेजी साम्राज्यवाद को भारत में नए सहयोगी हासिल नहीं हो. चीन में किसी भी तरह से पूंजीपति के सम्पतिहरण करने के लिए कदम नहीं लिए जा रहे हैं. केवल जापानी संपत्ति का चीन में राष्ट्रीयकरण किया गया था, यहां

तक कि अमेरिकी उद्यमों का राष्ट्रीयकरण नहीं किया गया हैं, वे कार्य कर रहे हैं. यदि आपकी क्रांति चीनी प्रकार की है तो आपको उन कदमो को वर्तमान में नहीं उठाना होगा जो आपके पूंजीपति को अंग्रेजो के पक्ष में ढकेल दे. यहीं आपका चीनी मार्ग है. चीन में राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग (दुश्मन के खेमे में) गए नहीं और अब वे अमेरिकी साम्राज्यवाद के खिलाफ आगे आए हैं और वे चीनी लोगों की सरकार की मदद करते हैं. यह दर्शाता है कि वे अमेरिकी साम्रजवादियों को चीन में अलग-थलग कर रहे है. *भारत के विभाजन के संबंध में जो अंग्रेजो द्वारा आयोजित धोखाधड़ी का एक टुकड़ा है.* यदि आप कार्रवाई के एक कार्यक्रम का मसौदा तैयार कर रहे हैं तो वहाँ आपको कहना होगा कि आपको पाकिस्तान, भारत और सीलोन के बीच एक सैन्य और आर्थिक संघ की जरूरत है. ये तीन राज्य, जो कृत्रिम रूप से एक दूसरे से अलग किये गए है, करीब आ जाएगा. यह इन राज्यों में खुद को एकजुट करने के रूप में संपन्न होगा. एक साथ आने के इस विचार को आगे रखा जाना चाहिए और लोग आप का समर्थन करेंगे. पाकिस्तान और श्रीलंका में अभिजात वर्ग इसके खिलाफ होगा, लेकिन लोगों को उनके बारे में संदेह है. यह कृत्रिम विभाजन विशेष रूप से बंगाल में स्पष्ट है. बंगाल का प्रांत पहला अवसर मिलते ही पाकिस्तान से अलग हो जायेगा.

डांगे: राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग की समझ लगातार हमारे बीच निम्न भाव में लाया जाता है: मध्य पूंजीपति वर्ग राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग कहा जाता है. भारत में बड़े पूंजीपति अंग्रेजी साम्राज्यवाद की तरफ चला गया है.

कामरेड स्तालिन : क्या भारत में ऐसे बैंक है जो विशुद्ध रूप से अंग्रेजी हो?

डांगे : हां, भारत में अंग्रेजी बैंकों के साथ-साथ संयुक्त वाले बैंक हैं. हमारे कार्यक्रम में बड़े पूंजीपति, जो नौकरशाह पूँजी है, के राष्ट्रीयकरण के लिए एक मांग है.

कामरेड स्तालिन: यह नौकरशाही पूंजी नहीं बल्कि औद्योगिक व्यापारिक पूंजी है. चीन में नौकरशाही पूँजी राज्य के माध्यम से फला फुला. यह पूँजी राज्य से संबंधित है

और बहुत कम उद्योग से संबंधित है. अमेरिका के साथ विशेषाधिकार प्राप्त ठेके के माध्यम से सुन और अन्य लोगों के परिवार ने पैसे प्राप्त किये. चीन में बड़े उद्योगपतियों और व्यापारियों की चिंतायें : वे बरकरार बनी हुई हैं. मैं आपको बड़े पूंजीपतियों के सम्पतिहरण की सलाह नहीं नहीं देता हूँ, भले ही, वे अमेरिकी और अंग्रेजी बैंकिंग पूंजी के साथ गठबंधन में हैं. चुपचाप यह कहना बेहतर होगा कि जो कोई भी दुश्मन की ओर जाएगा वह अपनी संपत्ति खो देगा. सुनिश्चित रूप से, जब आपकी क्रांति आगे बढ़ेगी, बड़े पूंजीपतियों का एक हिस्सा भाग खड़ा होगा. तब उन्हें धोखेबाज घोषित कर दे और उनकी सम्पति जब्त कर ले, लेकिन मैं सिर्फ अंग्रेज पूंजी के साथ अपने गठबंधन के लिए बड़े पूंजीपति के सम्पतिहरण का सुझाव नहीं दूंगा.

यदि अपने कार्यक्रम में बड़े पूंजीपतियों के ज़ब्त के लिए एक मांग है, तो यह इसे बाहर निकल देना आवश्यक है. आपको एक नया प्रोग्राम या कार्रवाई के लिए मंच तैयार करने की आवश्यकता होगी. यह बड़े पूंजीपति को बेअसर करने के लिए और पूरे राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के नौवें -दसवें हिस्से को अलग करने में सहायक होगा. यह जरुरी नहीं है कि आप कृतिम रूप से अपने लिए नए दुश्मन पैदा करे. उनमें से कई आपके पास पहले से ही है: आपके बड़े पूंजीपति वर्ग की बारी आ जाएगी और फिर, निश्चित रूप से, आपको उनका सामना करना होगा. क्रांति की समस्यायें चरणों में तय की जाती हैं. चरणों को मिश्रित करने की जरूरत नहीं है. यह जरुरी है कि चरणों के अनुसार तय किया जाए और दुश्मनों को एक-एक कर हराया जाए - आज एक, कल अन्य, और जब आप और अधिक मजबूत हो जाए, आप उन सभी को हरा सकने में सक्षम हो सकते है, लेकिन वर्तमान में आप अभी भी कमजोर है. आपके लोग हमारी क्रांति की नकल करते है. लेकिन ये विभिन्न चरणें है. अन्य सहोदर दलों के अनुभवों को आलोचनात्मक रूप से ध्यान में रखा जाना चाहिए और इसे भारत की विशिष्ट परिस्थितियों के लिए अनुकूलित किया जाना चाहिए. बाम पक्ष से आपकी आलोचना की जाए गी, परन्तु आपको चिंता करने की

जरुरत नहीं है. बुखारिन और ट्रोट्स्की ने बाम पक्ष से लेनिन की आलोचना की, लेकिन वे एक उपहास का पात्र बने. रणदिवे ने बाम पक्ष से माओत्से तुंग की आलोचना की, लेकिन माओत्से तुंग सही थे - उन्होंने अपने ही देश की स्थितियों के अनुकूल कार्य किया. अपनी लाइन का पालन करें और अति वामपंथियों की चीख पुकार पर ध्यान नहीं दे.

अब दुसरे प्रश्न पर, चीनी मार्ग के बारे में.

मैंने पहले ही राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्रों में चीनी मार्ग पर बात की है. यह एक कृषि क्रांति होगी. सशस्त्र संघर्ष के बारे में यह कहने की जरुरत है कि चीनियों ने सशस्त्र संघर्ष की बात नहीं की थी, उन्होंने सशस्त्र क्रांति की बात की थी. उन्होंने इसे मुक्त क्षेत्रों के साथ और मुक्ति की एक सेना के साथ पक्षपातपूर्ण (गुरिल्ला) युद्ध के रूप में माना. इसका मतलब है कि आवश्यक रूप से सशस्त्र क्रांति और पक्षपातपूर्ण युद्ध की बात की जाए और न कि सशस्त्र संघर्ष की. 'सशस्त्र संघर्ष' की अभिव्यक्ति पहली बार कोमिन्फोर्म समाचार पत्र में उल्लेख किया गया था. सशस्त्र संघर्ष, पक्षपातपूर्ण युद्ध से भी अधिक अभिव्यक्त करता है, इसका मतलब किसानों के पक्षपातपूर्ण युद्ध और सामान्य हड़ताल और कामगारों की बगावत के संयोजन से है. अपने पैमाने में पक्षपातपूर्ण युद्ध एक सशस्त्र संघर्ष से संकरा होता है। चीन में सशस्त्र क्रांति कैसे शुरू किया गया?

१९२६-२७ में चीनी कामरेडों ने गुओमिन्दन्गिवादियों के साथ नाता तोड़ दिया. उन्होंने गुओमिन्ग्दन्ग के खिलाफ ४९-५० हजार व्यक्तियों की एक सेना तैयार होने के लिए एक अलग शिविर में स्वयं को संगठित किया. यह सेना पक्षपातपूर्ण युद्ध का आधार था. वे शहरों और रेलवे से दूर जंगलों और पहाड़ों में छिप गए. बेशक, जहाँ कही भी चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की के. स. थी, वहां उनके साथ बुनियादी कार्यकर्ता भी थे. चीनी मुक्ति सेना शहरों में जम नहीं सकती थी और यह कि यहाँ घेरना आसान था. ताकि वे घेर नहीं लिए जाए और नष्ट नहीं कर दिए जाए, उन्होंने कस्बो और रेलवे को बहुत पीछे छोड़ दिया और मुक्त पक्षपातपूर्ण क्षेत्रों की

एक श्रृंखला की स्थापना की. जब वे घेर लिए जाते थे तो वे इसे तोड़ कर बाहर निकल जाते, पुराने मुक्त क्षेत्रों को पीछे छोड़ जाते और नए का निर्माण करते और युद्ध न करने का प्रयास करते. जितना वे इसे जारी रखते, उतना ही अधिक चीनी कम्युनिस्ट मजदूरों और शहरों से अलग थलग पड़ते जाते थे. जाहिर है, माओत्से तुंग मजदूरों के साथ संबंधों को तोड़ना नहीं चाहते थे, लेकिन पक्षपातपूर्ण युद्ध का रास्ता उन्हें इस ओर ले गया और उन्होंने शहरों के साथ संपर्क खो दिया. यह एक गंभीर आवश्यकता थी. अंत में वे यनान में स्थापित हुए जहां उन्होंने एक लंबी अवधि के लिए खुद का बचाव किया. उन्होंने किसानो को खुद के पास बुलाया, कृषि क्रांति कैसे संचालित की जाये, इसका निर्देश दिया, अपनी सेना का विस्तार किया और एक गंभीर शक्ति में तब्दील किया. लेकिन यह सब करते हुए वे इससे नहीं बचे जिसका न रहना पक्षपातपूर्ण युद्ध की विशेषता थी.

एक मुक्त पक्षपातपूर्ण क्षेत्र क्या है? यह राज्य में पूरी तरह से एक द्वीप है, इस क्षेत्र में कोई पीछवाडा नहीं होता, इसे घेर लिया जा सकता है, नाकेबंदी किया जा सकता है, इसमें कोई पिछवाडा नहीं होता जिस पर आप भरोसा कर सकते है. ठीक यही हुआ. यानन घेर लिया गया था और बड़े हताहत के साथ चीनियों ने उस जगह को छोड़ दिया. यह लम्बे समय तक जारी रहता अगर चीनी कोम्मुनिस्तो ने मंचूरिया नदी को पार करने का निर्णय न लिया होता. मंचूरिया में बढ़ते हुए वे तेजी से अपनी स्थिति में सुधार किये, उन्होंने दोस्ताना राज्य के रूप में एक सहारा पाया. अब एक द्वीप नहीं था, यह एक प्रायद्वीप ऐसा कुछ था जिसका एक छोर सोवियत संघ से मिलता था. इसके बाद च्यांग काई शेक ने चीनी पक्षपातों को घेरने की संभावना खो दिया. और केवल इस के बाद, जैसा कि चीनी कहते है, उनके लिए उत्तर से दक्षिण तक आक्रामण के लिए जाने की संभावना बनी थी. ऐसा ही इतिहास है. इससे क्या निष्कर्ष निकलता है? किसानों के पक्षपातपूर्ण युद्ध एक गंभीर मामला है और क्रांति के लिए एक बड़ा हथियार है. इस क्षेत्र में चीनियों ने विशेष रूप से पिछड़े देशों के लिए, क्रांतिकारी व्यवहार में नया योगदान दिया है.

और जाहिर है, देश में जहाँ किसानों की संख्या आबादी का 80-90% हैं, प्रत्येक कम्युनिस्ट उनके संघर्ष के शस्त्रागार में इस विधि लागू करने के लिए बाध्य है. यह निर्विवाद है. लेकिन चीनी साथियों के इस अनुभव से यह भी निष्कर्ष निकलता है कि मुक्त क्षेत्रों के साथ पक्षपातपूर्ण युद्ध के अपने स्वयं की बड़ी कमियाँ है. कमियां ये है कि पक्षपातपूर्ण क्षेत्र नाकेबंदी के लिए हमेशा खुला द्वीप है. विजयी पूर्वक इस चक्रव्यूह से निकलने की सम्भावना केवल एक स्थाई सहारा, एक दोस्ताना पड़ोसी राज्य के साथ जुड़ने में और इस राज्य को अपना स्थाई सहारे में तब्दील करने में है. चीनियों ने मंचूरिया की तरफ बढ़ने का समझदारी भरा कदम उठाया. यदि वे ऐसा नहीं करते, मुझे नहीं मालूम मामला किस तरह ख़त्म होता. पक्षपातपूर्ण युद्ध में जीत हासिल करने के लिए अपर्याप्त ताकत होती है. पक्षपातपूर्ण युद्ध जीत की तरफ बिना अपवाद के ले जाता है यदि यह एक दोस्ताना पड़ोसी राज्य पर टिका हुआ हो.

यह खास तौर से ध्यान देने योग्य है कि चीनी कामरेड जब तक मंचूरिया नहीं पहुच गए तबतक उन्होंने घेराबंदी के डर से आक्रमण करना नहीं चाहा, और केवल इस संक्रमण के बाद ही उन्होंने आगे बढ़ने की योजना बनाना शुरू किया और च्यांग काई शेक के सैनिकों के खिलाफ सफलताओं के लक्ष्य हासिल किया. हमे पक्षपातपूर्ण युद्ध के इन कमजोरियों को ध्यान में रखना होगा. ऐसा कहा जाता है कि भारत में पक्षपातपूर्ण युद्ध क्रांति की जीत प्राप्त करने के लिए पूरी तरह से पर्याप्त है. यह गलत है. चीन में भारत की तुलना में ज्यादा अनुकूल परिस्थितियां थी. उनके पास चीन में जन मुक्ति सेना तैयार थी. आपके पास तैयार सेना नहीं है. चीन के पास रेलों का वैसा सघन जाल नहीं था जो गुरिल्लो के लिए उपयुक्त था जैसा कि भारत में है. सफल पक्षपात पूर्ण युद्ध की सम्भावना चीन की तुलना में आपके यहाँ कम है. औद्योगिक संबंध में भारत चीन की तुलना में अधिक विकसित है. यह प्रगति की दृष्टि से अच्छा है, लेकिन पक्षपातपूर्ण युद्ध की दृष्टि से खराब है. हालांकि कई टुकड़ी और मुक्त क्षेत्र बनाया गया है लेकिन ये सभी केवल

टापू ही होगें. आपके पास वैसा दोस्ताना पडोसी राज्य नहीं है जिसके सहारे पर आप निर्भर कर सकते है जैसा कि चीनी गुरिल्लो के साथ यु.एस. एस.आर. था.

अफगानिस्तान, ईरान और तिब्बत, इन जगहों पर चीनी कम्युनिस्ट अभी भी नहीं पहुंच पा रहे हैं..... सोवियत संघ के रूप में ऐसी कोई ताकत पीछे नहीं है जैसे कि चीनियों के पास मंचूरिया में था. बर्मा? पाकिस्तान? ये सभी भारत की शत्रुतापूर्ण भूमि सीमाएँ हैं, बचता है- सागर जो सहायक नहीं है. इसलिए ज़रूरी है कि रास्ता ढूँढा जाए!

क्या आपको पक्षपातपूर्ण युद्ध की जरूरत है? निश्चितरूप से आपको है.

क्या आपके पास मुक्त क्षेत्र और एक राष्टीय मुक्ति सेना होगी?

आपके पास उस तरह के क्षेत्र होंगे और संभवत: आपके पास उस तरह की सेना होगी. परन्तु यह विजय के लिए अप्रयाप्त होगा. आपको पक्षपातपूर्ण युद्ध को क्रन्तिकारी कार्यो के साथ गठबंधन करने की जरुरत है. इसके बिना, अकेला पक्षपातपूर्ण युद्ध को सफलता नहीं भी मिल सकती है. यदि भारतीय कामरेड रेलवे मजदूरों का एक आम हड़ताल संगठित करते है जो देश के जीवन और सरकार को ठप्प कर देगी तो यह पक्षपातपूर्ण युद्ध के लिए भारी मदद साबित हो सकता है. किसानो को ले... अगर आप उनसे कहते है - यह तुम्हारा पक्षपातपूर्ण युद्ध है और तुम्हे यह सबकुछ करना है, तो किसान पूछेगें -यह भारी संघर्ष केवल मेरे कंधो पर क्यों, मजदूर क्या करने जा रहे है? क्रान्ति के सभी भार को वह अपने ऊपर लेने को तैयार नहीं होगा, वह काफी बुद्धिमान है, यह जानने के लिए उसके पास चेतना है कि सारी बुराइयां - कर आदि - शहरों से आती है. शहरों में वह एक सहयोगी चाहेगा.

अगर आप उनसे कहते है कि वह मजदूरों के साथ मिल कर इस भार को उठाएगा तो वह समझ जाये गा और स्वीकार करेगा. रूस में हमारे साथ वैसी ही स्थिति

थी. आपको न केवल किसानो के बीच पक्षपातपूर्ण टुकड़ी बनाने के लिए काम करने की जरुरत है , बल्कि मजदूर वर्ग के बीच गहन गंभीर कार्य करने, उनका विश्वाश हासिल करने और उनके बहुमत को जीत लेने की जरुरत है, आपको मजदूरों के बीच से सशस्त्र टुकड़ी बनाने, मजदूरों का, रेलवे कामगारों का हड़ताल संगठित करने और शहरों में मजदूरों के दस्ता बनाने की जरुरत है. जब ये दो धाराएँ मिल जाती है - जीत को सुरक्षित माना जा सकता है. आपको मालूम है कि १९०५ में जार लोगो के सामने झुका, ड्यूमा और अन्य स्वतंत्रता एक सीमा तक दिया. ज़ार को पीछे हटने के लिए मजबूर किया गया था.

किस चीज ने जार के अन्दर इस तरह का आतंक पैदा किया? रेलवे मजदूरों के हड़ताल ने! राजधानी पूरे देश से कट चुकी थी, रेलवे मजदूरो ने केवल मजदूर प्रतिनिधियों को पीटर्सबर्ग में आने दिया और माल या कुछ और के लिए प्रवेश की अनुमति नहीं दी.

रेलवे मजदूरों के हड़ताल का क्रांति में महत्व बहुत बड़ा था और इसने पक्षपात पूर्ण दस्तो को सहायता पहुचाई.

तब - चौकियां के बीच, सैनिकों के बीच का काम. १९१७ में हमने इस हद तक सैनिकों के बीच प्रचार किया था कि सभी चौकियां हमारे पक्ष में खड़ी थी.

किस चीज ने सैनिको को हमारी तरफ लाया? यह एक ऐसा हथियार था कि, कज्जाक तक, जो जार के स्वामिभक्त गार्ड थे, उनके साथ खड़े नहीं रह सकें. सही राजनीती करने के लिए, एक क्रांतिकारी मनोदशा बोना और प्रतिक्रियावादी हलकों के भीतर मतभेद आह्वान करना होता है।

चीनी मार्ग चीन के लिए अच्छा था. लेकिन यह भारत के लिए प्रयाप्त नहीं है जहाँ सर्वहारा संघर्ष को किसानो के संघर्ष के साथ जोड़ने की जरुरत है. कुछ लोग सोचते है कि चीनी कामरेड्स उस तरह के गठबंधन के खिलाफ है. यह गलत है. क्या माओ त्से तुंग नाराज होते अगर संघाई के मजदूर उस समय हड़ताल पर जाते जब

उनकी सेना नानकिंग से रवाना हुई थी, या यदि मजदूर आयुध कारखाने में हड़ताल करते? बिलकुल नहीं. लेकिन ऐसा नहीं हुआ क्योकि माओ त्से तुंग का सम्बन्ध शहरों से टूट गया था. बेशक, माओत्से तुंग खुश होते अगर रेलवे मजदूर हड़ताल करते और च्यांग काई शेक प्रोजेक्टाइल प्राप्त करने की संभावना से वंचित किया गया होता. लेकिन मजदूरों के साथ संबंधों का अभाव था - यह एक गंभीर आवश्यकता थी, लेकिन यह काल्पनिक नहीं था. यह आपके लिए काल्पनिक होगा अगर आप वह करने का प्रयास करते है जो चीनी लोगो द्वारा नहीं किया जा सकता था -श्रमिक वर्ग के संघर्ष के साथ किसान युद्ध को एकजुट करने का काम.

डांगे : हमने पक्षपातपूर्ण युद्ध के सिद्धांत को लगभग एक ऐसे सिद्धांत में बदल दिया जिसमे श्रमिक वर्ग की भागीदारी की आवश्यकता नहीं थी.

कामरेड स्तालिन : यदि माओ त्से तुंग यह जान पाते तो आपको धिक्कारते. (हंसी) अब हम अगले प्रश्न पर चलते है. क्या हम नेहरु सरकार को अंग्रेजी साम्राज्यवाद की कठपुतली सरकार मान सकते है जैसा कि च्यांग काई शेक के कुओमिन्तांग सरकार अमेरिकी साम्राज्यवाद की कठपुतली सरकार थी और जैसा कि वर्तमान में सोफिया(प्लेवेन) की फ्रांस की सरकार अमेरिकी साम्राज्यवादियों की एक कठपुतली है?

मेरी समझ के अनुसार, च्यांग काई शेक को एक कठपुतली नहीं माना जा सकता जबतक वह चीन में आधारित था. वह कठपुतली बन गया जब वह फोर्मासा(अब ताइवान) को भाग गया. मै नेहरु सरकार को एक कठपुतली जैसा नहीं मान सकता. उनकी सभी जड़े आबादी में हैं. यह बाओ दाई की सरकार की तरह नहीं है .... बाओ दाई वास्तव में एक कठपुतली है. इसलिए यह निष्कर्ष निकलता है कि भारत में पक्षपातपूर्ण युद्ध को संघर्ष का मुख्य रूप माना जा सकना असंभव है, शायद इसे संघर्ष का उच्चतम रूप कहने की आवश्यकता है ? संघर्ष के विभिन्न रूप होते है जो उच्चतम रूप की ओर ले जाते है. किसानों के लिए: जमीन मालिकों

का बहिष्कार, कृषि श्रमिकों की हड़ताल, पट्टेदार किसानों द्वारा श्रम की वापसी, जमींदारों के साथ अलग-अलग झड़पें, जमीन मालिकों की भूमि की जब्ती और तब संघर्ष के उच्चतम स्वरुप के रूप में पक्षपातपूर्ण युद्ध. श्रमिक वर्ग के लिए: स्थानीय हड़तालें, शाखा हड़तालें, राजनीतिक हड़तालें, विद्रोह के द्वार पर खड़ी सामान्य राजनीतिक हड़ताल, और फिर संघर्ष का उच्चतम स्वरुप के रूप में सशस्त्र विद्रोह. इसलिए यह कहना असंभव है कि पक्षपातपूर्ण युद्ध देश में संघर्ष का मुख्य रूप है. यह कहना भी गलत है कि देश में गृह युद्ध पूरे जोरों पर है. तेलंगाना में भूमि जब्त हुआ, लेकिन यह बहुत थोड़ा साबित हुआ. यह अभी भी संघर्ष के उद्घाटन की शुरुआत है, लेकिन यह संघर्ष का मुख्य रूप नहीं है जिससे भारत अभी भी दूर है. किसानो को छोटे सवालों पर संघर्ष करने के लिए सीखने की जरूरत है - पट्टे किराए घटाने, फसल की हिस्सेदारी कम करने जिसे जमीन मालिक को दिया जाता है, आदि. यह जरुरी है कि कार्यकर्ताओं को इन छोटे सवाल पर शिक्षित किया जाए और एकएक सशस्त्र संघर्ष की बात न की जाये. अगर आप एक आम सशस्त्र संघर्ष से आरम्भ करेगें तो आपके सामने गंभीर समस्याएं आयेगीं क्योकि आपकी पार्टी अभी कमजोर है.

इसलिए जरुरी है कि पार्टी मजबूत बने और जन संघर्ष को आवश्यक दिशा की तरफ निर्देशित करे और कभी कभी आम जनता को नियंत्रित भी करे. हमने १९१७ में कैसे शुरू किया?

हमारे पास सेना में, बेड़े में कई समर्थक थे, हमारे पास मास्को और लेनिनग्राद सोवियते थी. हालांकि हमने श्रमिकों के विद्रोही आंदोलन रोका. उन्होंने अस्थायी सरकार की बर्खास्तगी की मांग पेश की. लेकिन तब यह हमारी योजनाओं से मेल नहीं खाता था क्योकि लेनिनग्राद चौकी हमारे हाथ में नहीं था. जुलाई में पुतिलोव कारखाने के श्रमिकों ने जहाँ ४०-५०,००० लोग काम करते थे, प्रदर्शन शुरू किया जिसमे नाविक और सैनिक शामिल हो गएँ. उन्होंने अस्थायी सरकार को उखाड़ फेंकने की मांग की और वे के. स. के इमारत में मांगों के साथ आयें. हमने उन्हें वापस भेज दिया क्योकि हम जानते थे कि हमारी योजना के अनुसार गंभीर विद्रोह

के लिए हमारी सभी तैयारियां अभी पूरी नहीं हुई थी. विद्रोह के लिए वस्तुपरक कारक अस्तित्व में था - जब जनता ने आगे आने का प्रयास किया, लेकिन विद्रोह के आत्मगत कारक नहीं था - पार्टी अभी भी तैयार नहीं थी.

विद्रोह के सवाल को एक महीने आगे सितंबर में रखा गया. हमने विद्रोह को संगठित करने का फैसला किया था, लेकिन यह एकदम गुप्त था. हमने इस बारे में कुछ भी प्रकाशित नहीं किया था. जब पोलित ब्यूरो के सदस्य कमेनेव और ज़िनोविएव ने इसे दुस्साहसिक करार देते हुए विद्रोह के खिलाफ प्रिंट मीडिया में बाहर बात की, लेनिन ने उन्हें धोखेबाज घोषित किया और कहा कि उन्होंने हमारी योजनाओं को दुश्मन को सौंप दिया था. इसलिए विद्रोह के बारे में कभी चिल्लाओ नहीं अन्यथा विद्रोह में अप्रत्याशित का तत्व को खो जाता है.

यहाँ कॉमरेड राव कहते हैं - लोगों के सामने आये और सशस्त्र विद्रोह के बारे में उनसे पूछे ..... ऐसा कभी नहीं किया जाता है, अपनी योजनाओं के बारे में बाहर कभी नहीं बोले, वे आप सभी को गिरफ्तार कर लेंगे. चले, हम मान लेते है कि किसान कहते हैं: हाँ, हमें एक विद्रोह की जरूरत है. लेकिन अभी भी इसका मतलब यह नहीं है कि हम लोगों का अनुसरण करें, और लोगों की पूंछ के साथ अपने आप को खींचें जाने दे. नेतृत्व की महत्ता इसमें है कि वह अपने लोगो को ले चले. कभी कभी अपने स्वयं के क्षेत्र के तथ्यों और घटनाओं के आधार पर, न कि पूरे देश की दृष्टि से विद्रोह के समग्र प्राप्यता के अनुरूप लोग कहते है कि वे विद्रोह के लिए तैयार है. इस सवाल पर निर्णय के.स. द्वारा लिया जाना चाहिए. अगर यह स्पष्ट है तो हम अगले प्रश्न पर जा सकते हैं.

भारतीय कामरेड्स : हाँ, यह स्पष्ट है.

कामरेड स्तालिन: आप पूछते है, क्या पार्टी संगठन एक सदस्य पर मौत की सजा दे सकती है, जिसके समर्पण में संदेह पैदा हुआ है. यह नहीं हो सकता. लेनिन ने हमेशा सिखाया है कि अधिक्त्तम सजा जो के. स. दे सकती है - वह पार्टी से निष्कासन है, लेकिन जब पार्टी सत्ता में आती है और कुछ सदस्य क़ानून तोड़ते

है, तब सरकार जिम्मेदारी के रूप में मोकदमा चलाती है. दुश्मन के सम्बन्ध में कामरेडो को व्यक्तिगत आतंक की ओर लगातार झुकाना आपके कुछ दस्तावेजों से कोई भी देख सकता है. अगर आप हम रूस साथियों से इस बारे में पूछते है, तो हमें आपको कहना पड़े गा कि हमारे बीच पार्टी ने हमेशा व्यक्तिगत आतंक को नकार की भावना में प्रशिक्षित किया जाता है. अगर हमारे अपने लोग किसी जमींदार के खिलाफ संघर्ष करते है और वह एक झड़प में मारा जाता है तो हम इसे व्यक्तिगत आतंक नहीं मानते क्योकि जनता ने झड़प में भाग लिया है. यदि पार्टी एक जमींदार को मारने के लिए खुद आतंकवादी टुकड़ी का आयोजन करती है और यह आम जनता की भागीदारी के बिना किया जाता है, तो हम हम हमेशा इसके खिलाफ होते है क्योकि हम व्यक्तिगत आतंकवाद के खिलाफ हैं. व्यक्तिगत आतंक के इस तरह की सक्रिय कार्यवाई, जब जनता निष्क्रियता की स्थिति में होती हैं, जनता की खुद की गतिविधि की भावना की हत्या कर देती है, जनता में निष्क्रियता की भावना भर देती है, इसके अलावा, लोग निम्न प्रकार से मामलों देखने लगते है - हम गतिविधि में संलग्न नहीं रह सकते, नायक ही हमारी ओर से काम करेंगे. इस प्रकार, वहाँ एक हीरो है और दूसरी तरफ भीड़ है जो संघर्ष में भाग नहीं ले रहा है. जनता की गतिविधि के प्रशिक्षण और संगठन की दृष्टि से इस तरह की स्थिति बहुत खतरनाक है. रूस में इस तरह की एक पार्टी थी - एसआर(एस) - जिसके पास प्रमुख मंत्रियों को आतंकित करने के लिए विशेष टुकड़ी थी. हमने हमेशा इस पार्टी का खिलाफत किया. इस पार्टी ने जनता के बीच सभी शाख खो दिया. हम नायक और भीड़ के सिद्धांत के खिलाफ हैं.

आपने यह भी पुछा है, भारत में वर्तमान में जमीन के राष्टीयकरण के सवाल को कैसे रखा जाए?

एक तरफ, वर्तमान चरण में आपको इस मांग को आगे करने की ज़रूरत नहीं है, कभी नहीं, जमींदारों के जमीन के विभाजन के लिए मांग रखे और साथ ही कहे कि भूमि राज्य को दे दिया जाना चाहिए. पीपुल्स डेमोक्रेसी के देशों में भूमि के राष्ट्रीयकरण की घोषणा कहीं नहीं की गयी थी, चीन में भी नहीं. लोगों के

लोकतांत्रिक देशों में उन्होंने इस के साथ क्या किया था? वहाँ उन्होंने भूमि की खरीद और बिक्री पर प्रतिबन्ध लगा दिया था. यह राष्ट्रीयकरण के तरफ बढ़ने का तरीका है. केवल राज्य भूमि का अधिग्रहण कर सकता है. अलग-अलग व्यक्तियों के हाथों में जमीन का संचयन को ख़त्म होना है. राष्ट्रीयकरण की मांग को अभी आगे करना आपके लिए हानिकर होगा.

आपके साथियों में से कुछ समझते है की भारत में गृह युद्ध शुरू हो गया है. इस बारे में बात करना अभी जल्दबाजी होगा. गृह युद्ध के लिए स्थितिया बनती है लेकिन वे अभी तक नहीं बनी है.

अब आपके द्वारा क्या किया जाना है?

यह अच्छा होता अगर आपके पास एक कार्यक्रम(प्रोग्राम) होता, या अगर कहा जाए तो, कार्रवाई का एक मंच होता. बेशक आपके यहाँ कलह होगी. हमारे बीच भी कलह थी, लेकिन हमने फैसला किया था कि जो कुछ बहुमत तय करेगा वह कानून बन जाएगा. यहाँ तक कि जो साथी बहुमत के फैसले से सहमत नहीं थे उन्होंने भी ईमानदारी से इन फैसलों को अंजाम दिया ताकि पार्टी के एक एकल इच्छाशक्ति के साथ काम कर पाए. आप सभी चर्चा की इच्छा रखते है. यह शांति के समय में आप के लिए स्वीकार्य हो सकता है लेकिन एक क्रांतिकारी स्थिति आपके उस तरफ बढ़ रही है और आपको अपने आपको इस लक्जरी की अनुमति नहीं देनी चाहिए. यही कारण है कि बहुत कम लोग आपकी अपनी पार्टी में है, आपके अंतहीन विचार विमर्श ने जनता को विभ्रमित किया है. १९०३ -१२ की अवधि में जार के शर्तो के तहत जहाँ तक संभव था बोल्शेविकों ने मेंशिविकों को बाहर निकलने के उद्देश्य से खुला बहस चलाया जैसा कि उस समय हमारी लाइन उनसे अलग होने की थी. लेकिन आपके पास ऐसी स्थिति नहीं है जंहा पार्टी में दुश्मन शामिल हो. इसके बाद, जैसा कि हमने १९१२ में मेंशेविको को बाहर फेंका और मेंशेविकों से मुक्त अपनी पार्टी बनायी, पार्टी सजातीय बन गयी. मतभेद तब भी होते थे - तब हम संकीर्ण हलको में इकठ्ठा समस्या पर चर्चा कर लेते और बहुमत के निर्णय के

अनुसार, हम सबने काम किया. बोल्शेविको के सत्ता में आने के बाद ट्रोट्स्की ने पार्टी के ऊपर चर्चा करने पर जोर दिया जिस पर हम प्रारम्भ करने की इच्छा नहीं रखते थे. ट्रोट्स्की ने उकसाते हुए कहा कि पार्टी चर्चा नहीं चाहती हालाकिं पार्टी सच के खिलाफ लड़ना चाहती है. हमने चर्चा शुरू की और ट्रोट्स्की को हराया. लेकिन यह एक ऐसी चर्चा थी जिसके खिलाफ पूरी पार्टी खड़ी थी. यदि पार्टी कमो-बेस सजातीय है और वैचारिक एकता है, तो उस तरह की पार्टी को चर्चा की जरूरत नहीं होती. चर्चा संकीर्ण हलकों में किये जाने की जरुरत होती है, और न की प्रिंट मीडिया में. वहाँ, जो कुछ बहुमत द्वारा फैसला लिया जाता है, वही कानून होता है.

घोष: कॉमरेड स्टालिन सही है. खुली चर्चा हमारे लिए स्वीकार्य नहीं है.

कॉमरेड स्तालिन: हमारी पार्टी में पार्टी के ५,६००,००० सदस्यों और ८००,००० उम्मीदवार सदस्य हैं. उम्मीदवार सदस्यता का क्या महत्व है? इससे पूर्व बजाय पार्टी में सदस्यों को स्वीकार करने के हम इसमें शामिल होने के इच्छुक लोगों का सत्यापन करते थे. कुछ कुछ को चार, पांच वर्ष तक इन्तजार में रखा गया था, हम उन्हें प्रशिक्षित करते थे. कई ने पार्टी में शामिल होने की कामना की, लेकिन पहले उनका सत्यापन करना होता था, दूसरे यह जरुरी था कि उन्हें प्रशिक्षित किया जाये. प्राथमिक समाजवादी शिक्षा जरूरी है और प्रवेश, उसके बाद है. हमारे व्यवहार में उम्मीदवारी की संस्था ने इसे उचित ठहराया है. पार्टी के चारों ओर हमसे सहानुभूति रखने वालों की एक बड़ी परत है. लेकिन हम , नए सदस्यों के साथ पार्टी में भीड़ नहीं बढ़ा सकते, हम बहुत ज्यादा पार्टी का विस्तार नहीं कर सकते. मुख्य बात यह है कि भर्ती कराये व्यक्ति के पास एक गहरी गुणवत्ता है, न कि पार्टी के सदस्यों की एक मात्रा है.

आप यह भी मुझसे पूछते हैं - किन स्थितियों में एक पक्षपातपूर्ण युद्ध शुरू किया जा सकता है. उन्नत पूंजीवादी देशों में पक्षपातपूर्ण युद्ध का महत्त्व नहीं हो सकता, यहाँ गुरिल्ला योद्धा जल्दी ही पकड लिए जाते हैं. एक विशेष रूप से मध्यम विकसित और पिछड़े देशों में पक्षपातपूर्ण युद्ध का बहुत महत्व बनता है. उदाहरण

के लिए, संयुक्त राज्य अमेरिका में या जर्मनी में पक्षपातपूर्ण युद्ध आरंभ करना बहुत मुश्किल है. यहां मुख्य रूप से कई बड़े शहर, विकसित रेलवे नेटवर्क, औद्योगिक क्षेत्र देखते हैं, और गुरिल्ला इन परिस्थितिओं में एक दम से पकडे जाते है. यह जरुरी है, ताकि बड़े पैमाने पर लोग खुद को हीरो समझे, और नायक अपने आपको दुश्मन के खिलाफ लोगो की इच्छाओं को लागू करने वाले निष्पादको के रूप में समझे, यह लोगो को निष्क्रियता की ओर नहीं बल्कि गतिविधि बढाने की ओर ले जाता है. तेलंगाना में जो उभर आया है, उसे हर तरह से समर्थन देना आवश्यक है. यह गृह युद्ध के पहले का अंकुरण है. लेकिन एक अकेले पक्षपातपूर्ण युद्ध पर भरोसा करने की जरूरत नहीं है. यह, ज़ाहिर है, सहायता प्रदान करता है, लेकिन इसे खुद को मदद की जरूरत होती है.

लोगो के बीच, मजदूरों के बीच, सेना में, बुद्धिजीवियों के बीच, किसानों के बीच बड़े काम करने आवश्यकता है. यदि आप मजदूर के बीच से सशस्त्र टुकड़ी बनाते हैं, वे सामान्य भ्रम की स्थिति में सही अवसर पर सरकारी संस्थानों को जब्त कर सकते है. लेनिनग्राद में हमारे पास मजदूरों के गार्ड थे, हमने उन्हें प्रशिक्षित किया था और श्रमिकों के विद्रोह के समय हमारे लिए महान सेवा देने वाले साबित हुये, उन्होंने शीतकालीन पैलेस जब्त कर लिया. हमारे किसानो ने मजदूर वर्ग की ओर से बड़ी सहायता की थी. सामान्य में, समाज के सभी वर्गों की तुलना में किसानों का श्रमिक वर्ग में महान विश्वास है. यह जरुरी है कि संघर्ष के इन दो रूपों -मजदूरों और किसानों के संघर्ष, किसान विद्रोह और श्रमिकों के मार्च - को एकजूट किया जाए.

आपको इंडोनेशिया की घटनायें याद है. इंडोनेशिया में में कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व अच्छा था, लेकिन वे समय से पहले विद्रोह के लिए उकसाये गये थे. वे अच्छे, पौराणिक, साहसी लोग थे, लेकिन वे उकसावे में आ गए और मिट गए.

आपके लिए अच्छा होगा यदि आपके पास एक मंच या गतिविधि का एक कार्यक्रम हो. इस मंच के केन्द्र बिन्दु के रूप में इसे डाले या कृषि क्रांति का कार्यक्रम बनाये.

आपने नेहरू की विदेश नीति के चरित्र के बारे में भी मुझसे पुछा हैं. यह बंद खेल रहा है और चालाकियों में से एक है और यह दिखाने के लिए है कि वह अमेरिकी नीतियों के खिलाफ है. अपने कामों में नेहरू सरकार इंग्लैंड और अमेरिका से खेलता है.

कामरेड राव, डांगे, घोष और पुन्नैयाह : चर्चा के लिए कॉमरेड स्टालिन को धन्यवाद दिया और घोषणा की कि कॉमरेड स्टालिन के निर्देशों के आधार पर वे अपने सभी गतिविधि पर पुनर्विचार करेंगे और इन निर्देशों के आलोक में कार्य करेगें.

कॉमरेड स्तालिन: मैंने आपको कोई निर्देश नहीं दिया है, यह बात आप के लिए अनिवार्य नहीं है, यह एक सलाह है, आप इसे अपनाने या नहीं अपनाने के लिए स्वतंत्र है.

बातचीत तीन घंटे से अधिक जारी रही.

वी. ग्रिगोरयान द्वारा लिया गया

(हस्ताक्षरित) वी. ग्रिगोरयान

टाइपप्रति

RGASPI F. Op. 11 D. 310, LL. 71-86.

सामजिक और राजनैतिक इतिहास के रूसी ऱाज्य अभिलेखागार के अधिकारीयों की अनुमति से प्रकाशित

रुसी से अंग्रेजी में विजय सिंह द्वारा अनुदित

Revolutionary Democracy, Vol. XII, No. 2, September 2006.

http://revolutionarydemocracy.org/rdv12n2/cpi2.htm

अंग्रेजी से हिंदी में एम् के. आज़ाद द्वारा अनुदित